



॥ श्री सीता चालीसा ॥
॥ श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री सीता चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

जनकसुता जगदम्बिका, राम हृदय आधार।
करहु कृपा वैदेहि मम, हरहु सकल संताप॥
भूमिजा जननी जानकी, करुणा सिंधु अपार।
भक्ति, शक्ति, सुख दीजिए, रखिए सदा दुलार॥

॥ चौपाई ॥

जय जय सीता जग जननी माता।
रामप्रिया सुखमंगलदाता॥
जनक भवन प्रगटी सुखकारी।
जग ने माना रूप तुम्हारी॥
भूमि तनय कहलायी माता।
भक्तन की तुम भाग्य विधाता॥
वैदेही मिथिला की रानी।
करुणामयी मंगल भवानी॥
शिव धनुष स्वयंवर शुभ कीन्हा।
रामचन्द्र को वर स्वरूप लीन्हा॥
सिय-राम युग जग में न्यारा।
भक्तों का तुम एक सहारा॥
वनगमन सुखपूर्वक माना।
पतिव्रत धर्म सदा पहचाना॥
संकट आए धीरज धारा।
धर्म न छोड़ा एक भी बारा॥
स्वर्ण मृग की लीला न्यारी।
रावण हरि ले गया कुमारी॥
अशोक वाटिका दुःख सह डारा।
राम नाम उर सदा उचारा॥
हनुमत आए मुद्रिका लाई।
आशा की ज्योति पुनः जगाई॥

चूड़ामणि संदेश पठाया।
राम मिलन का मार्ग बताया॥
लंका विजय भयो सुखकारी।
मिली राम से जनक दुलारी॥
अग्नि साक्षी पावन नारी।
जग ने मानी महिमा भारी॥
लव-कुश की जननी माता।
ज्ञान, धर्म की तुम विधाता॥
वाल्मीकि आश्रम सुखदाई।
ममता रूप सदा दिखलाई॥
क्षमा, दया की मूर्ति न्यारी।
संकट हरणी मंगलकारी॥
जो नर नारी ध्यान लगावें।
सुख, समृद्धि सहज ही पावें॥
सौभाग्य, संतान सुख देती।
भक्ति सुधा मन भीतर भरती॥
दीन जनों पर कृपा बरसाओ।
मन की सारी पीर मिटाओ॥
राम सहित हृदय में बसो माँ।
जीवन को मंगलमय कर दो माँ॥
भक्ति, शक्ति, विवेक प्रदानो।
धर्ममार्ग पर सदा चलानो॥
सीताराम नाम जो गावै।
भवसागर से पार उतरावै॥

॥ दोहा ॥

जो यह चालीसा पढ़े, श्रद्धा सहित मन लाय।
सीताराम कृपा करें, सुख-सम्पत्ति घर आय॥
जनकनन्दिनी कृपालु, सुनहु भक्त की पुकार।
भक्ति, शांति, मोक्ष दो, चरणन में उद्धार॥

॥ श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥